<u>बालगोबिन भगत</u>

कहानी का सार / प्रतिपाद्य

बालगोबिन भगत लेखक के गाँव में कबीर संप्रदाय मानने वाले एक व्यक्ति हैं। बालगोबिन भगत का जीवन सादा तथा सरल है। वे कबीर जी पर विश्वास करते हैं और उनके उपदेशों के अनुसार जीवन जीते हैं। सुबह चार बजे उठकर कबीर की रचनाओं का गायन करना और पूरे दिन एक गृहस्थ की तरह जीवनयापन करना उनकी दिनचर्या है। वे और साधुओं की तरह भक्ति नहीं करते हैं। वे अपने ज़िम्मेदारियों को निभाते हुए भक्ति करते हैं। जो कुछ कमाते हैं, उसे ईश्वर को समर्पित करने के बाद जो मिलता है, उसे ग्रहण करते हैं। वे गाँव के अवश्य हैं मगर उनमें रूढ़ीवादी मानसिकता विद्यमान नहीं है। अपनी विधवा बहू का पुनः विवाह करवाने के इच्छुक हैं। जीवन के प्रति उनकी सोच सरल तथा उच्च है।

बालगोबिन भगत की चारित्रिक या स्वभावगत विशेषताएँ

- सरल
- शांत
- ज्ञानी
- परिश्रमी
- समझदार
- स्वाभिमानी
- कर्तव्यनिष्ठ
- अनुशासन पसंद
- नई सोच के समर्थक

कहानी का उद्देश्य

- ग्रामीण जीवन शैली की सादगी को प्रकट करना।
- उच्च और सादा जीवन शैली अपनाने पर बल देना।
- बालगोबिन भगत के माध्यम से समाज में व्याप्त संकीर्ण और रूढ़िवादी सोच पर प्रहार करना।

पाठ से मिलने वाला संदेश / शिक्षाएँ

- यह पाठ हमें संदेश देता है कि भक्ति के लिए साधुओं की भांति रहने के स्थान पर हमें अपनी ज़िम्मेदारी निभाते हुए प्रभु भजन करना चाहिए। हमारी भक्ति समाज के लिए भी हितकारी होनी चाहिए।

ISC COACHING CENTRE